International Journal of Technology and Applied Science (IJTAS)

E-ISSN: 2230-9004 ● Website: www.ijtas.com ● Email: editor@ijtas.com

हिंदी कहानी सहित्य में साम्प्रदायिकता की त्रासदी

Dr. S. Suryavathi

Lecturer
Government Degree College, Chodavaram

शोध सार:
भारतीय समाज बहुधार्मिक एवं की बहुसांस्कृतिक संरचना ने साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है। विशेषतः औपनिवेशिक काल, स्वतंत्रता संग्राम, विभाजन की त्रासदी तथा उत्तर-आधुनिक युग में उत्पन्न साम्प्रदायिक तनावों ने हिंदी कहानी को सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़ा। यह शोध-पत्र हिंदी कहानी साहित्य में साम्प्रदायिक की अवधारणा, उसके ऐतिहासिक विकास, सामाजिक संदर्भ तथा प्रमुख कथाकारों के साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज की बहुधार्मिक एवं बहुसांस्कृतिक संरचना ने साहित्य को गहराई से प्रभावित की। भीष्म साहनी, यशपाल, कमलेश्वर, अब्दुल बिस्मिल्लाह तथा समकालीन कथाकारों की कहानियों का विश्लेषण किया गया है। शोध का निष्कर्ष यह है कि हिंदी कहानी साहित्य मानवता, न्याय, सहिष्णुता एवं गंगा-जमुनी संस्कृति को साम्प्रदायिक विभाजन से ऊपर स्थापित करता है।

कुंजी शब्द: साम्प्रदायिकता, शरणार्थी, सद्भावना, विभाजन, मानवता, सहिष्णुता

शोध सारांश:

सांप्रदायिकता वह मानसिकता या विचारधारा हैं जिसमें व्यक्ति अपने धर्म, जाति, सांप्रदाय को सर्वोच्च मानकर अन्य संप्रदायों के प्रति असहिष्णुता, घृणा या वैमनस्य की भावना रखता हैं। इस विचारधारा के परिणाम हैं – सांप्रदायिक दंगे और सांप्रदायिक हिंसा। इसमें राष्ट्रीय हित की अपेक्षा सांप्रदायिक हित को अधिक महत्व दिया जाता हैं। भारतीय समाज सांप्रदायिकता के विविध रंगों से प्रभावित होकर निरंतर इसकी पीडा से जूझ रहा हैं।

भारत में धर्म को कर्म के साथ जोड़कर देखने की परम्परा है। साथ ही धर्म को सांप्रदायिकता के साथ जोड़कर देखा जाता है, जबकि धर्म का सांप्रदायिकता के साथ कुछ भी लेना-देना नहीं है। साधारणतः यह देखा गया है कि सांप्रदायिकता के लिए केवल धर्म को जिम्मेदार माना गया है। यह कथन सत्य नहीं है। सांप्रदायिकता के कई कारण हैं—आर्थिक कारण, भाषाई कारण, वर्ग, क्षेत्र आदि। सांप्रदायिकता राष्ट्रवाद के साथ भी जोड़ी गई। भारतीय संदर्भ में यह कहा गया कि राष्ट्रवाद की अवधारणाएँ सहज रूप में विकसित हुई हैं। इसी संदर्भ में भारतीय समाज विभाजन की जटिलता में निहित है। राष्ट्रवाद और सांप्रदायिकता को प्रायः एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में देखा जाता है।

हिन्दी के रचनाकारों की सामाजिक प्रतिबद्धता आज़ादी से काफी पहले से ही रही है। इन रचनाकारों ने समाज की विसंगतियों पर काव्यात्मक बहुत पहले से ही टिप्पणी की है। आधुनिक काल में भी यह प्रक्रिया जारी रही है। सांप्रदायिकता की समस्या को लेकर हिन्दी के सभी विधाओं में प्रमुख मात्र में लिखा गया है। खासकर भारत विभाजन से उत्पन्न अनेक

समस्याओं पर कहा गया है। अपनी कोमल संवेदना के कारण साहित्यकार भारत विभाजन जैसी महा त्रासदी से उदासीन नहीं रह सका।

भारत विभाजन से जन-जीवन के साथ-साथ साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कहानी भी व्यापक रूप से प्रभावित हुई है। बदले हुए अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में कहानियाँ नए तेवर और अंदाज के साथ प्रस्तुत होने लगीं हैं। कहानीकारों ने विभाजन के दौरान घटी पाशविक घटनाओं, उंन घटनाओं के संदर्भ में मनुष्य की द्वंद्वपूर्ण मनःस्थितियों के विरुद्ध आवाज उठाना दायित्व समझा। हिन्दी साहित्य में ऐसी कहाँईकारों की लम्बी परम्परा रही है। मोहन राकेश, विष्णु प्रभाकर, कमलेश्वर, अमृतराय, भीष्म साहनी, बंदी उज्जमा, कृष्णा सोबती, अब्दुल बिस्मिल्लाह, अमृतलाल नागर, नमिता सिंह, नसिरा शर्मा, शिवसागर मिश्र, हृषिकेश सुलभ, देवेन्द्र इस्सर, उपेन्द्रनाथ अश्क, महीप सिंह, अज्ञेय, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मोहन राकेश कृत 'मलबे का मालिक' कहानी में परिवेश के दबाव से पीढित सांप्रदायिकता का चित्रण, विश्वास व अविश्वास के द्वंद्व को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त किया हैं। 'कंबल'' कहानी के द्वारा परिवर्तित नैतिकता व आर्थिक विवशता के फलस्वरूप मानवीय संबंधों में व्याप्त स्वार्थपरता का चित्रण किया है।

विष्णु प्रभाकर की कहानी 'मेरा वतन' में सांप्रदायिक मानसिकता के वर्णन के साथ-साथ मिट्टी के प्रति अटूट लगाव का मार्मिक चित्रण हुआ है। शरणार्थियों की गहन जिजीविषा भी प्रकट हुयी हैं। 'सफर के साथी' कहानी में हिंदू-मुस्लिम तवान का चित्रण किया हैं। 'अधूरी' कहानी में विष्णु प्रभाकर ने विभाजन के संदर्भ में हिंदू धर्म की जडता, अस्पृश्यता व बहिष्कार की भावना जैसी रूढियों को चित्रित किया हैं। 'तांगेवाला' कहानी में सांप्रदायिक विभीषिका से पीड़ित निम्न आय वर्ग के लोगों की दशा का मार्मिक चित्रण किया है।

यशपाल की 'जन्मभूमि' कहानी में मानवीय संवेदना के उत्कट नमूने संकलित हैं। यह कहानी हिन्दू—मुस्लिम द्वंद्व के संदर्भ में आर्थिक व सामाजिक कारण व्यक्ति की मानसिकता को परिवर्तित करने का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलती है। 'आजादी' के माध्यम से साम्प्रदायिक विकृत की गुलामी कर रहे लोगों की क्रूरता का चित्रण किया है।

कमलेश्वर की कहानी 'कितने पाकिस्तान' में विभाजनोत्तर सांप्रदायिकता का चित्रण दृष्टिगोचर होता है। 'धूल उड जाती हैं' कहानी के माध्यम से मनुष्य का धरतीए से लगाव व अटूट रिश्ता व्यक्त करते हुए पाकिस्तान के छलावे का यथार्थ भी उजागर हुआ है। 'भटके हुए लोग' में विभाजन के फलस्वरूप अजीविका की स्थिति में भटकते शरणार्थी समुदाय की विवशता का चित्रण हुआ है। 'इतनी सी बात थी' कहानी भी सांप्रदायिक सद्भावना की कहानी हैं। अमृतलाल नागर की कहानी 'व्यथा का सरगम' में विभाजन के दौरान हुई पाशविकता के दौर में स्त्रियों की दुर्दशा का चित्रण किया गया है।

भीष्म साहनी की कहानी 'अब्दुल्ला आ गया है' में मानवीय हिंसा के फलस्वरूप लोगों में अपनी क्रूर मानसिकता का चित्रण किया है। तत्कालीन वातावरण में सहज स्थितियों में भी व्यक्ति सांप्रदायिक विभाजन का शिकार होकर हिंसक हो

उठता है। 'तमस' कहानी मनुष्य की मानवीय उदारता का परिचय दिलाती है। 'सरदारनी' कहाँई एक ऐसी निर्भीक नारी की कहानी हैं जो सांप्रदायिक वातावरण में भी मानावीय मूल्यों की रक्षा करने में मर्दों को भी पीछे छोड देती हैं।

गिरिराज कोशोर की कहानी 'कभी न छाँडो खेत' में कानपुर में सिखों पर हुए हिंदुओं के दंगों के सये में एक ऐसे दम्पति का चित्रण किया गया हैं, जिसमें पति सिख हैं, पत्नी हिंदू। वे ऐसी संतान पैदा करने का संकल्प करते हैं जो साम्प्रदायिकता की भावना से मुक्त हो। 'आतंक' कहानी में एक ऐसे बच्चे का चित्रण किया हैं, जिसके माता-पिता को आतंक्वादियों ने मार डाला हैं। इस घटना ने बच्चे की जुबान छीन ली हैं। उसे गूँगा बना दिया हैं।

कृष्णा सोबती की 'अन्तिम इबारत' में स्त्री की खामोश वेदना को आजीवन ढोते हुए इंसानी चेहरों की व्यथा को स्वर प्रदान किया है। अपनी जड़ों से कटकर गए लोगों के भीतर की टूटन व छटपटाहट को व्यक्त किया है। परम्परा में करुणा व मानवता के बंधन से पीड़ित व्यक्ति की छटपटाहट को स्वर प्रदान किया है। इनकी कहानी 'सिक्का बदल गया' जीवित परिवेश व मानवीय परिस्थितियों के चित्रण के साथ-साथ मनुष्य के भीतर के बदलते मूल्यों का उद्घाटन करती है। संजीव की कहानी 'मुर्दागाह' संप्रदाय निरपेक्ष संवेदना की कहानी हैं। 'अलारखा', 'दरगाह और मूरतें', सांप्रदायिक जुनून के विरोध में लिखी गयी एक संवेदनापूर्ण कहानियाँ हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानी 'झगड़ा' में दंगा फैलाने वालों के भाव व मनःस्थितियों को उजागर किया है। अब्दुल्ला नागर के उपन्यास 'दो कौड़ी के लोग' में साम्प्रदायिकता के बीच सौहार्द्र स्थापना में परम्परागत दृष्टिकोण का वर्णन किया है। 'अतिथि देवो भव' हिंदू-मुसलमान के भेद-भाव से उत्पन्न गहरी संवेदना से युक्त कहानी हैं। नसिरा शर्मा की कहानी 'राजा का चौक' में सांप्रदायिक विद्वेष के उदय से उभरते स्वार्थी तत्वों का परिचय दिया है। 'सरहद के पार' कहानी में नासिरा शर्मा ने हिंदू-मुस्लिम संघर्ष को प्रस्तुत किया हैं। इस कहानी का पात्र रोहान हिंदू-मुसलमान फसाद के समय स्वयं हिंदुओं को भला-बुरा कहता था, लेकिन जब कुछ मुसलमान युवक हिंदू लडकी का इज्जत लूट रहे होते, रेहान के भीतर के मानव जागृत हो जाता हैं, और वह उस लडकी को उन दरिंदों के चंगुल से बचाकर उसके घर तक छोड आता हैं। 'इबने मरियम', 'असली बात', 'इनसानी नस्ल' कहानियों में साम्प्रदायिक सहिष्णुता दृष्टिगोचर होती हैं।

उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानी 'दंगल तले' में विभाजन के संदर्भ में मानवीय भावना के सशक्त पक्ष का व्यक्त किया है। 'झाड़ी' कहानी में ज्ञान व अज्ञान के द्वंद्व में निहित मनुष्य को व्यक्त किया है। देवेन्द्र इस्सर की कहानी 'पानी और खून' में विभाजन के दौरान हुए लोगों के घटनाक्रम चित्रित हैं। 'डाची' कहानी सांप्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमें दिखाया गया है कि धार्मिक भेदभाव के कारण सामान्य जीवन कैसे अस्त-व्यस्त हो जाता है। 'शहर में घूमता आईना' कहानी में समाज का वास्तविक चेहरा सामने आता है। सांप्रदायिकता के कारण लोगों के व्यवहार में आए बदलाव को लेखक ने प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया है।

अज्ञेय की कहानी 'साँप के तमंचे' में हिन्दू–मुस्लिम के द्वंद्व, संदेह की अवस्थाओं व अन्तर्द्वंद्व भावनाओं का चित्रण किया है। यह कहानी 1946 में घटित दंगों के रूप में 'हिन्दू–मुस्लिम भाई-भाई' कहानी में मनुष्य के दोहरे व्यक्तित्व का चित्रण किया है। बेटा कब्र कहानी में ऐसे बच्चों की अंतर्राष्ट्रीय पीड़ा का चित्रण किया है जो विभाजन ने उन बच्चों का अतीत छीनकर उन्हें अनिश्चित भविष्य दे दिया है। 'मार्कण्डेय' कहानी में अज्ञेय ने मुसलमान बस्तियों की उदारता व राम-जानकी का उद्घाटन किया है। 'शरणदाता' कहानी में अज्ञेय ने सांप्रदायिक दंगे के दौर में मानवीय संवेदनाओं पर प्रकाश डाला गया हैं।

चंद्रकांता की कहानियों में कश्मीर में फैलते आतंकवाद, कश्मीरी पंडितों के विस्तापन और शरणार्थी के रूप में जीवन बिताने का चित्रण किया हैं। 'कित्थे जाणा पुत्तर', 'वितस्ता का जहर', 'आवाज', 'नवशीन मुबारक', 'काली बर्फ' आदि कहानियों में देश के बँटवारे के बाद कश्मीर की बदलते हालत का, भय, आतंक, असुरक्षा के महौल, मुजाहिदों की दरिंदगी, हिंदू लडकियों के प्रति उनकी क्रूरता, बर्बरता, अत्याचार, खून-खराबे और लूट-पाट का प्रभावशाली चित्रण इनकी कहानियों प्रस्तुत हैं।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की 'चिनगारी' कहानी हिन्दू-मुस्लिम तनाव की छोटी-सी घटना से शुरू होकर बड़े दंगे का रूप लेने की प्रक्रिया दिखाती है। उग्र बताते हैं कि कैसे छोटी अफवाहें और भड़काऊ लोग समाज में आग लगा देते हैं। 'दोजख की आग' कहानी में दंगों की भयावहता और निर्दोष लोगों की पीड़ा का चित्रण है। 'बलात्कार' कहानी दंगों के दौरान स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार को सामने लाती है और साम्प्रदायिकता के अमानवीय रूप को उजागर करती है। 'दिल का बोझ', 'छुरा के सामने', 'बाप', 'खुरासान', 'बँटवारा', 'ईश्वर झरोखा', 'नौकर', 'छुट्टी' आदि विभाजन की समस्याओं को उजागर करती हुई आक्रोशपूर्ण विचारधारा को व्यक्त करती हैं।

विभाजन पर आधारित कहानियों में रचनाकारों ने विभाजन के परवर्ती परिणामों के साथ-साथ उन स्थितियों के संदर्भ में भी विभिन्न रूपों में व्यक्त किया है। इन कहानियों में मुख्य रूप से व्यक्ति का परिवेश से संघर्ष, मूलगत संकट, विस्थापन की पीड़ा, साम्प्रदायिक द्वेष, राजनीतिक कुटिलता, मानवीय विवशता, मूल्य-संघर्ष, स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता आदि का वर्णन साम्प्रदायिक संदर्भों में किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ – मोहन राकेश
2. यशपाल की कहानियाँ – सं. विष्णु प्रभाकर
3. कमलेश्वर की कहानियाँ – सं. कमलेश्वर
4. भारत विभाजन और हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ – सं. नन्दकुमार
5. साम्प्रदायिक सद्भावना की कहानियाँ – सं. विराज दारण
6. अन्तर्राष्ट्रीय कहानियाँ – सं. उपेन्द्रनाथ अश्क
7. अब्दुल बिस्मिल्लाह की चयनित कहानियाँ – सं. अब्दुल बिस्मिल्लाह

8. अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ - सं. सच्चिदानंद हीरानंदर वात्सयायन अज्ञेय
9. **कहानी संग्रह-** सत्तर श्रेष्ठ कहानियां – सं. उपेन्द्रनाथ अश्क
10. मेरी सोंटी रोटी लाल – पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र